भारतभूषण

आकाश बेल	मनवंशी
ओ री! आकाश बेल मुझमें मत और खेल तू मेरा शीश मौर अब क्या दूं तुझे और अर्पित सर्वस्व तुझे पुहुप–पुहुप, बौर–बौर तन रेखाचित्र हुआ मन न हुआ अनुद्वेल पियराया पात–गात जुठलाया गात–पात दिन–दिन मस्तिष्क बंधा मुरझाया रात–रात अभिनय कितना अभिन्न वास्तव कितना अमेल मैं मधुवन में उदास बंधक सब गति–विकास सोन बरन बाहों में बिके–बिके दिवस–मास अम्बर छिन जाय, हाय नेह न इतना उड़ेल ओ री! आकाश बेल	हर ओर कलयुग के चरण मन स्मरण कर अशरण–शरण धरती रेंभाती गाय–सी अन्तोन्मुखी की हाय–सी संवेदना असहाय–सी आतंकमय वातावरण प्रत्येक क्षण विषदंश है हर दिवस अधिक नृशंस है व्याकुल परम् मनुवंश है जीवन हुआ जाता मरण सब धर्म गंधक हो गये सब लक्ष्य तन तक हो गये सद्भाव बंधक हो गये, असमाप्त तम का अवतरण।
('नये–पुराने' गीत अंक–5, 1999 से साभार)	सम्पर्क– 950 ब्रह्मपुरी मेरठ (उ.प्र.)